

17. दिखावे से दूर

—जयप्रभा

गांधी जी तब अफ्रीका में थे। उनके सत्याग्रह की खबरें सारी दुनिया में फैल चुकी थीं। उन्हीं दिनों वह लंदन गए। यह खबर वहाँ पढ़ने वाले भारतीय छात्रों को भी मिली उन्होंने गांधी जी से कहा तो गांधी जी उनके जलसे में भाषण देने को तैयार हो गये।

भाषण से पहले खाने-पीने का प्रबंध था। वे युवक तैयारियों में लगे हुए थे। कोई रसोई बना रहा था। बर्तन साफ कर रहा था। इन लोगों के साथ एक दुबला-पतला आदमी भी काम रहा था। हिन्दुस्तानी ही था। उसे वहाँ कोई जानता-पहचानता नहीं था।

शाम हो गई। लोग जमा होने लगे। उन लड़कों को फ़िक्र हुई। वे सोचने लगे कि यदि गांधी जी न आए तो क्या होगा ?

तभी एक नेता वहाँ आ गये। उन्होंने युवकों के बीच काम करने वाले आदमी को आदर से नमस्कार किया। दोपहर से गांधी जी उनके साथ दावत का इंतजाम करने में लगे थे।

युवकों ने बार-बार क्षमा मांगी। कहने लगे—“हमने आपको पहले नहीं देखा था। नहीं तो आपको कष्ट न करने देते।”

लेकिन गांधी जी न माने। वह उसी तरह काम में लगे रहे। उन्होंने मेज़ पर बर्तन लगाए। भोजन भी परोसा। जब सब खा चुके तब सभापति बन गए और भाषण किया। गांधी जी में झूठा बड़प्पन नाम को भी न था।

बालक का उपहार

गांधी जी को सारा देश प्यार करता था। वह लोगों के प्यार का बड़ा सम्मान करते थे। खास तौर से बच्चों के प्यार में तो जैसे वह अपने को भूल ही जाते।

एक बार वे मुम्बई गये। वहाँ मारवाड़ी स्कूल में ठहरे। स्कूल के बहुत से बालक आकर उनसे बातें करते रहे। कुछ बच्चों ने प्यार से चीज़े भेंट कीं।

गांधी जी के चलने का समय हो गया। वे अपना सामान बांधने लगे। सामान पूरा बंध चुका था लेकिन वे कुछ ढूँढे जा रहे थे। काका कालेलकर ने पूछा—“आप क्या ढूँढ रहे हैं ?” बापू ने कहा—“एक पेंसिल थी। वह नहीं मिल रही है।” काका कालेलकर ने कहा—“आप मेरी पेंसिल ले लीजिए।” बापू ने वह पेंसिल नहीं ली। बोले—“वही पेंसिल मिलनी चाहिए। उसे खोने का मुझे हक नहीं है। मद्रास में एक लड़का मुझे प्यार से अपनी पेंसिल दे गया था। वह मेरे पास बहुत दिनों से है।”

सब लोगों ने मिलकर ढूंढी तो मिल गई। पेंसिल दो इंच से भी छोटी थी। बापू ने उसे संभाल कर रख लिया। तब कहीं चलना हो सका।

बापू प्यार की कीमत जानते थे।

* अभ्यास *

1. युवकों ने गांधी जी को क्यों नहीं पहचाना ?
2. युवकों ने गांधी जी से क्षमा क्यों मांगी ?
3. इस घटना से गांधी जी के किस गुण का पता चलता है ?
4. गांधी जी खोई पेंसिल को ही क्यों प्राप्त करना चाहते थे ?

☆☆☆☆☆